IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 6.252
Volume 2, Issue 2, February 2022

भारत में स्त्रियों की दषा एवं उसमें सुधार

डॉ राधिका देवी
एसो. प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
ए. के. पी. (पी. जी.) कॉलिज, खुर्जा, जिला. बुलन्दषहर (उ. प्र.)

मनुस्मृति के अनुसार भारतीय समाज में यह मान्यता रही है कि–''जहाँ नारी को पूज्य माना जाता है, वहाँ देवताओं का निवास होता है और जहाँ उसे पूज्य नहीं माना जाता, वहाँ सत्र कार्य निष्फल होते हैं,'' परन्तु इसके होते हुए भी भारत में नारी की स्थिति वैसी नहीं है, जैसी होनी चाहिए भारतीय समाज में नारी की स्थिति की विवेचना इन शीर्षकों में किया जा सकता है।

(1) पुरूष की अपेक्षा परिवार में स्त्री को कम महत्व–भारत में परिवार का रूप पितृ सत्तात्मक है, जिसमें परिवार में पुरूष (पिता) की चलती है तथा स्त्री (माता) को हर बात के लिए उसके अधीन रहना पड़ता है।

(2) सामाजिक दृष्टि से स्त्री पर पुरूष का संरक्षण–भारतीय समाज में स्त्री जाति को सदा पुरूष के संरक्षण में ही रहना पड़ता है, यह कहा जाता है कि विवाह से पूर्व उसे अपने पिता के संरक्षण में, विवाह के बाद उसे अपने पति के संरक्षण में तथा वृद्धावस्था में उसे अपने पुत्र के संरक्षण में रहना पड़ता है, इससे उसमें स्वावलम्बन व आत्मसम्मान की भावना कभी भी उत्पन्न नहीं हो पाती।

(3) आर्थिक दृष्टि से पुरूष पर स्त्री की निर्भरता–भारत का सामाजिक ढांचा कुढ ऐसा है कि अधिकांश पत्नियाँ अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपने पति पर ही निर्भर रहती हैं, प्रायः पति कमाते हैं और पत्नियाँ उनकी कमाई से अपने सहित पूरे घर का खर्च चलाती हैं स्वतंत्रता के बाद से स्थिति में कुछ अन्तर आया हैं, अनेक क्षेत्रों में स्त्रियाँ भी कमाने लगी हैं पर कमाने वाली स्त्रियों का प्रतिशत स्त्रियों की पूरी जनसंख्या पर नगण्य है, इस प्रकार के उदाहरण कम हैं, जिनमें पत्नी कमाती हो और पति जीवनयापन हेतु पत्नी पर निर्भर हो, प्रायः स्त्रियाँ ही आर्थिक दृष्टि से पुरूषों पर निर्भर होती हैं।

(4) घर की चार–दीवारी में रहने के कारण दृष्टिकोण का संकुचन–भारतीय समाज की यह मान्यता है कि स्त्रियों का उचित स्थान घर है और उसका मुख्य कर्त्तव्य गृहिणी धर्म का पालन है, इस मान्यता का परिणाम यह हुआ कि स्त्रियाँ स्वयं भी घर की चार दीवारी से बाहर नहीं निकलना चाहतीं, इससे उनका दृष्टिकोण संकुचित हो जाता है।

संदर्भ सूची :

1. डॉ0 नीलिमा कुँवर एवं सीमा कन्नौजिया (1998) कुरूक्षेत्र माह–सितम्बर ग्रामीण क्षेत्र एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
2. नीलिमा अग्रवाल–(2005) कुरूक्षेत्र माह–नवम्बर ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. सुरेन्द्र कटारिया–(2005) कुरूक्षेत्र माह–नवम्बर ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
4. जितेन्द्र कुमार पाण्डेय (2006)–कुरूक्षेत्र, माह–अगस्त ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
5. डॉ0 आर.बी.सिंह (2008)– भारत में महिला सशक्तिकरण, श्री जी.पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
6. हस्तक्षेप, पंचायती राज–महिला सशक्तिकरण–2009, अंक 8 सितम्बर, राष्ट्रीय सहारा लखनऊ।
7. प्रतियोगिता दर्पण नवम्बर 2020,पृष्ठ94–95।
8. प्रतियोगिता दर्पणजून–2018 पृष्ठ 92।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 6.252
Volume 2, Issue 2, February 2022

9. प्रतियोगिता दर्पण मार्च–2018, पृष्ठ 98।
10. प्रतियोगिता दर्पण नवम्बर–2018, पृष्ठ 95–96।
11. प्रतियोगिता दर्पण फरवरी–2019, पृष्ठ 60।
12. प्रतियोगिता दर्पण सितम्बर–2021, पृष्ठ 73–74।
13. गरीबी उन्मूलन एवं महिला सशक्तिकरण–प्रेमनारायण शर्मा, वाणी विनायक।
14. महिला सशक्तिकरण एवं लिंगभेद–डॉ0 ऋचा राज सक्सेना।
15. महिला सशक्तिकरण एवं समग्र विकास–प्रेमनारायण शर्मा।
16. शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण–वी. विनायक, प्रेमनारायण शर्मा।
17. महिला साक्षरता एवं सशक्तिकरण–डॉ0 मंजु शुक्ला।

❖❖❖